अन्धकार में बैठा इंसान दर दर ठोकर खाता है
कर कर पाप घिनौने अनगिनत दुःख वो पाता है
सुख ही सुख मिले मुझे यही कामना करता है
विनाशी सुख के लोभ में स्व विवेक से मरता है
सुख पाने के बड़े बड़े जतन करता ही रहता है
विकर्म करके पापों का घड़ा भरता ही रहता है
आने वाले कल की चिंता में सदा घिरा रहता है
सबसे ज्यादा खुद को दुखी समझता रहता है
घिरता ही जा रहा है अपने विकर्मों के जाल में
सुख का अनुभव कैसे होगा उसको ऐसे हाल में
एक यही समाधान है समझलो खुद को आत्मा
देहभान मिट जाए दिल में बसे शिव परमात्मा
विकारों की मेल उतार लो करके योग तपस्या
21 जन्म तक नहीं रहेगी विकारों की समस्या
ॐ शांति